Title-Code:- HARBIL01906

आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी की मासिक पत्रिका

अनुपमा यात्रा

SINCE 1970

'पुस्तकें वो साधन है जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं'
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

वर्षः 01/ संस्करणः 06/ पृष्ठः 08/ मूल्यः 5 रूपये | भिवानी, बुधवार 10 मई 2023 | anupama.express@ammh.ac.in

कोई भी पुत्र, कोई भी पिता, कोई भी परिवार कोई भी प्रतिज्ञा कोई भी परम्परा राष्ट्र से ऊपर नही हो सकतीः गजेंद्र चौहान

पत्रकारिता पर बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव पर आयोजित हुई संगोष्ठी

बाजार संचालित पत्रकारिता कोई नई अवधारणा नहीः त्रिभुवन

पत्रकारिता के भविष्य को मिलेगा प्रोद्योगिकी द्वारा आकारः आर.के. अनायत

भिवानी। 'कोई भी पुत्र, कोई भी पिता, कोई भी परिवार कोई भी प्रतिज्ञा कोई भी परम्परा राष्ट्र से ऊपर नही हो सकती'' यह वक्तव्य गजेंद्र चौहान ने आदर्श महिला महाविद्यालय और जर्नलिस्ट क्लब भिवानी के संयुक्त तत्वावधान में विषय 'पत्रकारिता पर बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव' पर आयोजित हुई संगोष्ठी मे साझा किये। उन्होने कहा कि पत्रकार लगातार बदलते मीडिया परिदृश्य में प्रासंगिक बने रहने के लिए बदलाव के लिए तैयार रहें और तकनीकी प्रगति के इस युग में, मीडिया संगठनों को अपने दर्शकों को नवीन और आकर्षक सामग्री प्रदान करने के लिए नई तकनीकों और डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाना चाहिए ।

महाविद्यालय मे आयोजित क्रार्यकम मे गजेंद्र चैहान, मशहूर फिल्म जगत के कलाकार और कुलपति, पंडित लख्मी चंद परफार्मिंग और विजुअल आर्ट्स राज्य विश्वविद्यालय और प्रो. आर के अनायत, कुलपति, दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मुरथल मुख्य अतिथि के रूप में पत्रकार क्लब भिवानी के सहयोग से आदर्श महिला महाविद्यालय द्वारा 'पत्रकारिता पर बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में चर्चा के लिए उपस्थित रहे। त्रिभुवन, प्रतिष्ठित पत्रकार, लेखक और शिक्षाविद, इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे ।

'आज के युवा इस प्रवृत्ति से सबसे अधिक प्रभावित हैं, क्योंकि वे मीडिया सामग्री के सबसे बड़े उपभोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं''। अशोक बुवानीवाला, महासचिव, ने सेमिनार के विषय ''पत्रकारिता पर बाजारवाद के बढते प्रभाव'' के महत्व के बारे में बताते हुए कहा। उन्होंने सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की कई उपलब्धियों का अवलोकन प्रदान किया और पत्रकारिता को रेखांकित करने वाले नैतिक और पेशेवर मूल्यों के बारे में छात्राओं को शिक्षित और संवेदनशील बनाने के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस तरह के सेमिनार जिम्मेदार पत्रकारिता को बढ़ावा देने में मदद करेंगे और छात्राओं को अच्छी तरह से जागरूक नागरिक बनने के लिए तैयार करेंगे जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। लेखक, शिक्षाविद् और वरिष्ठ पत्रकार त्रिभुवन ने अपने मुख्य भाषण में मीडिया उद्योग पर उपभोक्तावाद के प्रभाव पर जोर दिया। त्रिभुवन जी ने एक आदर्श पत्रकार के उदाहरण के रूप में महाभारत से संजय के चरित्र का हवाला देते हुए पत्रकारिता में मूल्यों और नैतिकता की प्रासंगिकता के बारे में बात की। उन्होने आर्टीफिशिल इटैलिजेंसी, मॉडर्न जर्नलिस्ट, मानव मूल्य व अन्य तकनीकी क्राति को छात्राओं के साझा किया। साथ ही यह भी बताया कि ए.आई बड़ी मात्रा में डेटा को संसोधित कर सकता है, पैटर्न और प्रवृत्तियों की पहचान कर सकता है और व्यापक कवरेज प्रदान कर सकता है। पत्रकारिता के भविष्य को प्रौद्योगिकी द्वारा आकार दिया जाएगा।

गजेंद्र चौहान ने अपने भाषण के दौरान, प्रतिष्ठित टेलीविजन श्रृंखला, महाभारत में काम करने के अपने समय की कुछ पुरानी यादों को भी छात्राओं के साथ साझां किया। उन्होंने परिवर्तन के महत्व पर जोर दिया और बताया कि जीवन के हर पहलू में यह कैसे अपरिहार्य है। प्राचार्य, रचना अरोड़ा, ने कहा, कि मीडिया की स्वतंत्रता और अखंडता महत्वपूर्ण है। मीडिया पर बाजार का प्रभाव मीडिया परिदृश्य में आवाजों की विविधता और बहुलता को सीमित कर सकता है। जिससे युवा दिमाग और उनकी निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। जर्नलिस्ट क्लब के अध्यक्ष ईश्वर धामू ने क्लब द्वारा संचलित समाजिक उत्थान की विभिन्न गतिविधियो को विचार गोष्ठी मे साझां किया।

आयोजन के दौरान जर्नलिस्ट क्लब भिवानी ने वरिष्ठ पत्रकार एवं पाठक पक्ष के संपादक देवेंद्र उप्पल को 37 वर्षों से अधिक समय तक पत्रकारिता में उनके अनुकरणीय योगदान के लिए देवव्रत वशिष्ठ मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया। जर्नलिस्ट क्लब भिवानी ने सेल्फी प्रतियोगिता 'एक दिया शहीदों के नाम' के विजेताओं को सम्मानित किया। नीलम अग्रवाल, करण पुनिया और मुकेश वत्स ने मुख्य अतिथियों से मोमेंटो प्राप्त किया। विचार गोष्ठी मे महाविद्यालय प्रबंधकाारिणी सीमिति के उपाध्यक्ष कमलेश चौधरी, कोषाध्यक्ष प्रीतम अग्रवाल, पवन केड़िया, विरेन्द्र भोड़ूका व जर्नलिस्ट क्लब के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम मे मंच का संचालन बड़े ही प्रभावी ढ़ग से डा. निशा शर्मा द्वारा किया गया कार्यक्रम संयोजिका ड़ा. रिंकू अग्रवाल, सहसंयोजिका जन सम्पर्क मीड़िया विभाग से गायत्री आर्य, रिचा आर्य, पूजा लाम्बा व पुलकित जैन उपस्थित रहे।

स्टेट पावर लिफ्टिंग इममैच्योर में छात्रा पूजा ने जीता स्वर्ण पदक

शारीरिक शिक्षा व खेलकूद विभाग की छात्रा पूजा (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने 37 जी हरियाणा स्टेट पावर लिफ्टिंग अकुशल चैंपियनशिप वजन 63 भार जूनियर में स्वर्ण पदक तथा रजत पदक वजन 63 भार सीनियर में व वजन 63 भार जूनियर में कांस्य पदक प्राप्त किया। छात्रा रचना बी.ए. तृतीय वर्ष ने वजन 69 भार जूनियर में रजत पदक प्राप्त किया। प्रतियोगिता दिनाकः 15-16 अप्रैल को भीम स्टेड़ियम में आयोजित की गई। इस उपलब्धि पर स्कूल प्रशासन ने पूजा को बधाई दी है।

अभिभावक शिक्षक मिलन समारोह में लिया 300 से अधिक अभिभावकों ने भाग

स्नातक व स्नातकोत्तर छात्राओं के लिए महाविद्यालय में अभिभावक शिक्षक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 300 से अधिक अभिभावको ने प्राध्यापिकाओ के साथ छात्राओं के भविष्य को लेकर बातचीत की ।उन्होंने छात्राओं को भविष्य में कराए जाने वाले विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स , कक्षा गतिविधि एवं छात्राओ के सर्वांगीण विकास से संबंधित विभिन्न प्रश्न भी पूछे ।जिसका प्राध्यापिकाओ ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया। इस अवसर पर मितथल से आए अभिभावक ने कहा की महाविद्यालय में छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कराई जानी चाहिए, ताकि वह पढ़ाई के साथ ही इन परीक्षाओं को भी समय से उत्तीर्ण कर अपना व अपने माता-पिता का सपना साकार कर सकें। एक छात्रा की माता ने विश्वास दिलाते हुए कहा कि बिना पिता के साए में आज वह इस महाविद्यालय में अपनी बच्ची को भेज कर पूर्ण संतुष्ट है, महाविद्यालय में कराई जाने वाली अनुशासनात्मक एवं शैक्षणिक गतिविधियों से छात्रा प्रतिवर्ष अच्छे अंको से पास हो रही है। प्राचार्या रचना अरोड़ा ने कहा की विद्यार्थियों

की उन्नति में सबसे अहम भूमिका माता-पिता एवं गुरुजन की होती है उनका आपस मे तालमेल होना आवश्यक है ।यदि किसी भी माता पिता को अपने बच्चों से संबंधित किसी प्रकार की कोई भी जानकारी प्राप्त करनी है तब वह महाविद्यालय आकर प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महाविद्यालय छात्राओं के शैक्षणिक , सांस्कृतिक एवं सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत है ,जिसमें अभिभावकों का सहयोग भी अनिवार्य है।

18वें अंतरराष्ट्रीय युवा महोत्सव 'घूमर' में छात्राओं ने मनवाया अपनी प्रतिभा का लोहा

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा जयपुर में आयोजित 18वें अंतरराष्ट्रीय युवा महोत्सव 'घूमर' में रंगोली प्रतियोगिता में हमारे महाविद्यालय की छात्रा मनीषा ने तीसरा स्थान, छात्रा सिमरन अंचल ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान व छात्रा श्वेता ने कोलाज मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

एन.सी.सी कमांडिंग ऑफिसर कैप्टन संदीप कुमार ने टीम सहित किया यूनिट का निरीक्षण

एन.सी.सी कमांडिंग ऑफिसर कैप्टन संदीप कुमार, जी.सी.आई गरिमा, नायब सूबेदार शंकर ने महाविद्यालय की एन.सी.सी यूनिट का निरीक्षण किया। आप के द्वारा कैडेट की सभी उपलब्धियों, गतिविधियों व रिकॉर्ड रजिस्टर का बारीकी से निरीक्षण किया गया ,साथ ही आवश्यक सुझाव भी दिए। महाविद्यालय प्राचार्या रचना अरोड़ा ने कैप्टन संदीप कुमार का बुके देकर स्वागत किया। कैप्टन संदीप कुमार ने एन.सी.सी कैडेट्स को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में बड़े-बड़े उद्देश्य चुनकर उन्हें पूरा करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए। इस अवसर पर सी.टी.ओ डॉ. रिंकू अग्रवाल उपस्थित रही।

EDITORIAL: NEW EDUCATION POLICY AND EMERGING SCENARIO

In our current national scenario ,we find new challenges coming up in different fields asking for new solutions at the level of Government and people at large. Entire spectrum seems to be undergoing a facelift and the field of education is also in for a revolution. With the New Education Policy in place, there is much premium on self- sufficiency and initiative- taking by the students. Just completing a course and obtaining degrees in Arts, Commerce and Science is no more enough. The policy has its onus on going beyond the traditional employment modes and methods . Start-ups and other initiatives for self- employment are the measures which can make our youth not only self- sufficient in earning their livelihood but also a provider of jobs and employment to so many others.

It is obvious that along with mere marks- scoring mindset , what the students urgently need today is an initiative-taking spirit and an out -of- box thinking. Herein the role of Teachers also undergoes a big change. Students already have access to digital platforms of education and now even Digital Universities. There is a plethora of information and subjectmatter already available to them. What the students now need from the teachers is their contribution in preparing the students for this new kind of scenario . First of all ,the teachers will need to make the students aware of this crucial altered reality. Then continual Motivation and Inspiration along with the Human touch- love, care and guidance coming from the teacher is the new role and responsibility that the teachers of today are expected and even advised to take up today. Infact, this is the only way for a teacher to stay relevant and respectable in our Digital India where all information is otherwise available at mere click of a button.The students must be made to feel that Google is no substitute for Guru as Google can give only information but a Guru gives inspiration. And this inspiration is a must in the future scenario of education which-calls for greater innovation, work-ethos and hardwork.

Dr. Aparna Batra
Chief- Editor

Besides this, the New Education Policy also puts emphasis on another very significant aspect-inculcation of Indianness in our youth. As of today, our youth are like rudderless ships with no anchor and it leads to belonginglessness and negativity. Indian spiritual wisdom and ancient knowledge -systems are highly appreciated all across globe. It is a matter of great concern that our youth are so much cutoff from their such powerful roots. In the times to come, we need to instill in them love for nation, love for our traditional knowledge and also indigenous scholarship. It will help twoways -in increasing of self- esteem of our youngsters and also in connecting them to the immediate ecosystem and environment which can make them think about possible work- opportunities related to the soil and the land. Then the villages will not need to rush to cities for livelihood,rather cities will come down to villages as villages will be centre of new enterprises and innovations.

Our youth today needs to develop a new mindset and outlook and so do we all. The earlier modules and ideas have already been exhausted . What is required now is a New Vision and a New Approach by all concerned stakeholders.

INSPIRATION ,HARDWORK AND INNOVATION ARE THE NEW SURVIVAL TRIMANTRAS!

Let us all rebirth ourselves and with new orientation and determination work towards finding new solutions for the new challenges!

How different is it to be a Student and a teacher in the same Almamater?

My Almamater witnessed my journey of transforming from a student to a Professor.

One's career is a journey and for many higher education professionals the journey includes returning to where it all started: your almamater. Since I joined my Almamater as a Lecturer, I became punctual, responsible and more productive compared to when I was a student in the same institution.

Now my teachers are my colleagues.

I was doing homework and assignments.

Now I give students the same.

I used to bunk lectures.

Now I tell students not to do the same.

I never used to talk in-between any lecture. So now I tell them to maintain 'silence'.

I got surprised with surprise-tests, Now I give students the same surprise.

Apart from all this, working in almamater is a great feeling. I feel less stress by reliving my College years, eating at my favourite places, sitting at my

favourite spots etc. Environment is new and the same also -new faces, new buildings and new challenges. I get to re-experience the College over and over again through the lense of this diverse community.

I get to see the campus, curriculum and community evolve-something that is really incredible to experience since leaving as a student.

At last, I would say it's nice to be back at Adarsh Mahila Mahavidyalaya where I am so comfortable. It is my proud privilege to be part of its growth and overall success.

You gave me wings to fly
.....My Almamater!

Dimple Aggarwal
(Assistant Professor,
Department of Political
Science)

Everything Happens for the Best

Like every student and a movie bug, she as a teen girl always dreamt of entering the fanciest college (Bollywood like), But the dream and the fantasy bubble of a teen girl busted when she landed up in AMMB where she was supposed to wear salwar-kurta. This was not the world she dreamt of, it was very hard time. Reality hit very hard. First the shattering of career-path she dreamt to walk on and then landing up in a girls' college of a small city Bhiwani. She was at the rock-bottom. She walked the premises of the college with lot of emotional baggage. Her self-confidence and sense of self-worth was at the lowest. But today I want to smile back to the little girl and want to say that everything is planned for the best.

The three years that I spent in the college were the best days of my life. AMMB has changed me and shaped me for the best. The people, friends and teachers that I met there, were the ones that have influenced me and have helped me to explore so many hidden shades of myself. I don't think any "fancy" college would have given me what AMMB has. There are thousands of experiences that were turning-point of my life and I want to share one such experience. AMMB became the reason that I met Dr. Aparna Batra and she is the sole reason of the way that I am today, the way I think and perceive everything. I met her through one of my seniors and at that time I was good for nothing in my eyes and may be in

others' too. But I don't know what she saw in me and suggested to me to meet her and participate in certain literary competitions for which I was not at all prepared or trained. But she came like an angel and a true teacher in my life and shaped me. Till today I remember every practice-session that I had with her and everything she taught me. I was broken-she helped me gather my pieces and trained me to rebuild my confidence in such a rock-solid manner that nothing has been able to shake it till now. It's been almost 6 years that I passed out of the college but I have never met anyone like her. She made me believe in myself. Whenever someone asks me about where I see myself in coming years, I always answer that I want to be someone like Aparna Ma'am who is always warm to everyone and helps all explore themselves the way she helped me.

Sometimes our life doesn't happen the way we thought or dreamt it would but my experience of AMMB has made my belief in the saying "Everything happens for good" very strong. Dr. Aparna Batra is the good that happened to me.

The mind-set with which I entered the college and the one that I came out with is exactly what one should expect from an institution. Whenever life does not seem to go the way you planned it, just believe may be there is a better plan made. I can never do enough but with all my heart I want to thank everyone at AMMB who guided me on path for making a better version of me. And I hope every child that has lost confidence and believe in self finds her AMMB and her Aparna Maam.

Thank you for everything. I am proud to be a part of AMMB and I just hope that I can make my institution feel the same way for me!

Yamini Verma
(Session-2016 Research Scholar,
Organic Chemisty)

My Green Environment

When we think of the word "environment", then it covers all those living things which live on the earth, whether on land or in the water. Additionally, it includes sunlight, the plants, air, animals and water also. Everyone, who is the part of this ecosystem, has the right to have a green and clean environment. Obviously, the green environment leads to the healthy environment which in turn leads to the healthy society. Every human being who is the pat of this society requires a safe planet. The process of conservation of resources, electricity, natural vegetation, conservation of trees and the habitat requires special attention. As the consumption of natural resources is increasing day by day, these must be conserved in order to maintain the ecological balance, to save them for our future generation. In our future generations what might be the situation, every body could understand. The responsibility of each and everyone is very clear. Students are the future of this world. This upcoming generation must have the awareness of using the renewable energy which could reduce consumption of energy and the knowledge of manufacturing some novel materials, capable of reducing waste. No doubt, education is the best way of creating awareness. The role of a teacher as a conservationist becomes important to impart the knowledge of environment education and its need. The teacher is a role model of any student whose motivation, courage and actions could make the student a "Green Warrier" of this society. By highlighting the pollution, ozone layer depletion, deforestation, climate change and other horrible and alarming environmental issues, students could understand that the

extinction of some creatures could adversely affect our food chain and the ecosystem. Students should become the part of some green societies or NGOs to make aware the society for planting trees, pollution-free environment, conservation of resources and our natural habitat. They could deploy themselves in the society as a part of the rallies, door to door campaigns, audits and surveys etc. In their campus they could start "swachhta action plan", tree-plantation, pollution-free, tobacco-free and plastic-free campaigns. For the purpose of conserving energy, they could go for the practices containing reduction in electricity bills, water consservation, use of solar energy, vermi-composting and waste-management etc. Let us understand and fix our responsibility in this direction so that our future generations could proudly say "this is our green environment".

Dr. Nisha Sharma
(Assistance Professor of Physics)

कला और कलाकार

मनोभावों की सुंदर प्रस्तुति कला हैं। कला जीवन को 'सत्यम् शिवम् सुंदरम् से समन्वित करती है। सत्य को सुंदरतम् रूप देना ही कला है या यूँ कहो कि कला से ही आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला का कोई छोर नहीं, यह अत्यंत विस्तृत है। अनेक विधाओं को अपने में समेटे हुए है।

''साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः
पुच्छ विषाणहीनः।।''

कला ऐसी ऊर्जा है जो लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर ले जाकर वह स्थान प्रदान करती है जहां मनुष्य 'स्व' से निकलकर 'वसुधैव कुटुम्बकम् से जुड़ जाता है। यह शक्ति अथवा ऊर्जा मनुष्य को अनंत से जा मिलाती है। तभी तो दीपक राग से दीप जल उठता है, मल्हार राग से मेघ वर्षण होता है। यह कला की साधना का ही चरमोत्कर्ष है।

'संगीत है शक्ति ईश्वर की,
हर सुर में बसे हैं राम ।
रागी तो गाये रागिनी,
रोगी को मिले आराम ।।'

कलाकार मूडी होता है, गुणी होता है। जब व्यक्ति अपने अन्दर व्याप्त शक्ति, ऊर्जा को पहचान कर उन्हें सुन्दर रूप में व्यक्त करता है, कलाकार कहलाता है। ब्रह्माण्ड की हर वस्तु में कला व्याप्त है। हर कण-कण में प्रेम रूपी कला व्याप्त है। कला हमेशा जीवंत रहती है । ब्रह्माण्ड की कोई वस्तु शाश्वत नहीं है परंतु कला अमर है।

संगीत, चित्रकारी, वास्तुकला, नृत्यकला, साहित्य कला- ये सब कला के प्रकार हैं। कला

को सत्य की अनुकृति प्लेटो ने माना अर्थात् सत्य यानि ईश्वर। जो ईश्वर के बिल्कुल समीप वह कला है। ईश्वर प्रेम स्वरूप है। प्रेम सुन्दरतम कला ।

हृदय की गहराईयों से निकली अनुभूति जब कला रूप लेती है तब कलाकार का अन्तर्मन नाच उठता है। चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या घुंघुरुओं की झंकार, रंगों से सनी तूलिका हो या सुरों की गूंज की पुकार । कला आत्मिक शांति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है। इस के माध्यम से ही कलाकार इंद्रधनुषी आत्मा से सुनहरे स्वह्निल विचारों को, भावों को साकार रूप देता है। कलाकार की सकारात्मक ऊर्जा ही है जो मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति रखती है। इसलिए कला साधना है कलाकार की जिसमें रम कर ही वह नवजीवन पाता है। कलाकार से कला नहीं, कला से कलाकार है।

कुमुद (सत्र-2010)

आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी
के जनसम्पर्क व मीडिया विभाग
एवं
जर्नलिस्ट क्लब भिवानी
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
विचार गोष्ठी

आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी
के जनसम्पर्क व मीडिया विभाग
एवं
जर्नलिस्ट क्लब भिवानी
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
विचार गोष्ठी
विषय : पत्रकारिता पर बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव

अंतर महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता में छात्रा वंशिका ने प्राप्त किया प्रथम स्थान

अंतर महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता में छात्रा वंशिका ने प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। भाषण प्रतियोगिता का विषय बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं रहा। महाविद्यालय प्राचार्या रचना अरोड़ा ने छात्रा की इस उपलब्धि पर उसे बधाई देकर उसका उत्साहवर्धन किया और कहा कि आज बेटियां हर क्षेत्र में अग्रणी है। हमें उन्हें उचित अवसर देकर उनकी प्रतिभा को निखारना चाहिए। छात्रा ने प्रतियोगिता की तैयारी एन.सी.सी. अधिकारी डॉ. रिंकू अग्रवाल के दिशा निर्देशन में की।

Showcased Innovative Ideas Through Power Point Presentations Competition

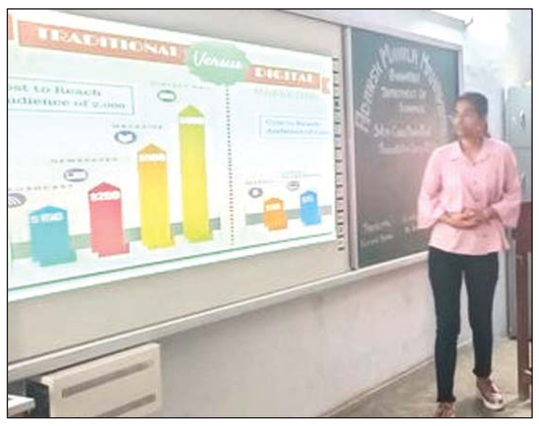

The Department of Economics organized an Inter-Class PowerPoint Presentation Competition. The competition was held under the guidance of Madam Principal, Mrs. Rachna Arora, P.G Coordinator, Dr Aparna Batra and the convener Dr Renu. The competition aimed to encourage the students to present their ideas and insights on various economic concepts and theories. A total of 14 students from different classes participated in the competition. In the competition. Sanjana from B.A. II secured the first position, while Khushboo from B.A. II and Khusboo from M.A. Economics Final Year secured the second position. Preeti Soni from M.A. Economics Final Year received the third position. All the participants actively engaged in the competition and presented innovative ideas through their slides. Overall, it was a great learning experience for the participants.

डूडल कला प्रतियोगिता का आयोजन

डूडल कला प्रतियोगिता का आयोजन बी.सी.ए विभाग और नृत्य विभाग द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस' के अवसर पर प्राचार्या रचना अरोड़ा , डॉ. नूतन शर्मा (समन्वयक)और दीपिका (संयोजक) के मार्गदर्शन में किया गया। प्रतियोगिता का निर्णय नीरू चावला, संगीता मनरो और रजिता सहरावत द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को मानसिक तनाव से दूर रखना और अन्य गतिविधियों में रुचि पैदा करना था। डूडलिंग का विषय ''नृत्य'' रहा। इस अवसर पर प्राचार्या ने सभी छात्राओं को बधाई देते हुए बताया कि वास्तव में डूडल सरल चित्र हैं जिनका ठोस प्रतिनिधित्वात्मक अर्थ हो सकता है। डूडलिंग को तनाव से राहत देने वाली तकनीक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। डूडलिंग को अक्सर कला चिकित्सा में शामिल किया जाता है, जिससे इसके उपयोगकर्ता ध्यान केंद्रित करते हैं और तनाव मुक्त हो जाते हैं। इस प्रतियोगिता में कुल पच्चीस छात्राओं ने भाग लिया। तमन्या बीसीए प्रथम वर्ष ने प्रथम, श्वेता बीए प्रथम वर्ष ने द्वितीय, दृष्टि बीसीए प्रथम वर्ष ने तृतीय, प्रियंका बीसीए द्वितीय वर्ष ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दादरी में 2 दिवसीय ललित कला कार्यशाला में 10 छात्राओं ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

जे.वी.एम. जी.आर.आर, महाविद्यालय, दादरी में 2 दिवसीय ललित कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे महाविद्यालय की ललित कला विभाग से 10 छात्राओं ने पैंटिंग, कोलॉज, स्कैच, पोस्टर मेकिंग, बेस्ट आउट आफॅ वेस्ट और क्ले मॉड़लिंग आदि विषयो मे भाग लेकर अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यशाला के माध्यम से छात्राओं मे आत्मविश्वास की वृद्धि हुई।

छात्राओं को दी म्यूच्यूअल फंड व निवेश संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां

करियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल के तहत वाणिज्य विभाग में एन.आई.एस.एम से संबंधित विचार गोष्ठी का आयोजन करवाया गया। जिसमें वाणिज्य विभाग की छात्राओं ने म्यूच्यूअल फंड, स्टॉक मार्केट, डेरिवेटिव मार्केट, एन.आई. एस.एम से संबंधित परीक्षाओं व अन्य निवेश संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दीपक कुमार रहे। कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्या रचना अरोड़ा के मार्गदर्शन में करियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल की कोऑर्डिनेटर नीरू चावला द्वारा किया गया।

बाल-विवाह और एंटी रैगिंग विषयों पर किया जागरूक

'कानून सजगता प्रकोष्ठ' और 'एंटी रैगिंग सेल' के तत्वावधान में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बाल-विवाह और एंटी रैगिंग विषयों पर शिक्षक वर्ग और विद्यार्थियों ने व्याख्यान दिए। कानून सजगता प्रकोष्ठ की संयोजिका डॉ. मधु मालती ने बाल-विवाह कुप्रथा पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। भारत मे बिहार, राजस्थान, झारखण्ड़ आदि प्रान्तों में बाल-विवाह की घटनाएँ बहुत हो रही हैं। बिहार में बाल-विवाह की दर 68 प्रतिशत हैं। केरल जैसे प्रदेश जहां पर साक्षरता दर सबसे अधिक है वहाँ पर भी इस प्रकार की घटनाएं पाई जाती हैं। सरकार समय-समय पर कानून बनाकर इस कुप्रथा को समाप्त करने का प्रयास कर रही है। समाज की जागरूकता भी इसके लिए जरूरी है। 'एंटी रैगिंग सेल' की संयोजिका डॉ. रिंकू अग्रवाल ने वर्तमान में विद्यार्थियों के साथ होने वाली रैगिंग की भयानक स्थिति बताते हुए इस कुरीति के खिलाफ अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम के अन्त में विद्यार्थियां से शपथ दिलवाई गई कि वे अपने आस-पास इन कुरीतियों को होने नहीं देंगे और एक स्वस्थ समाज के निमार्ण मे अपनी भूमिका निभाएगें।

राज्य स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कैथल में छात्राओं ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

इंदिरा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कैथल के राजनीति शास्त्र विभाग द्वारा राज्य स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय की द्वितीय वर्ष की छात्राएं सुघेश, नम्रता, प्रियंका, गुंजन और खुशी ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया और महाविद्यालय को गौरवान्वित किया ।

पोस्टर मेकिंग व स्लोगन लेखन प्रतियोगिताओं में लहराया परचम

अंतर महाविद्यालय पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा दीया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में सिमरन अंचल ने प्रथम व दीक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का मान बढ़ाया।

'एलीवेट योर करियरः रिज्यूम एंड़ इंटरव्यू' पर पाँच दिवसीय कार्यशाला आयोजित

व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ प्रोफेशनल जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास की अत्याधिक आवश्यकता होती है प्रोफेशनल जीवन में आप तभी सफल हो सकते है जब आप अपने आपको दूसरो से भिन्न बनाकर प्रस्तुत करेंगे। यह उद्गार आदर्श महिला महाविद्यालय में विषय 'एलीवेट योर करियरः रिज्यूम एंड़ इंटरव्यू' पर पाँच दिवसीय आयोजित कार्यशाला के समापन पर प्राचार्या रचना अरोड़ा ने कहे। उन्होनें यह भी कहा कि कार्यशाला मे आपने जो कुछ सीखा उसे व्यवहारिक जीवन मे अपनाऐं और ज्यादा से ज्यादा लोगो से बताऐं कार्यशाला का आयोजन प्राचार्या रचना अरोड़ा के मार्गदर्शन में करियर गाइडेंस और प्लेसमेटं सेल के तत्त्वावधान में सेल की कोर्डिनेटर नीरू चावला द्वारा किया गया। जिसमे सह-संयोजिका सेल से गायत्री आर्या व डॉ रितिका रही। कार्यशाला में प्रशिक्षक पुलंकित जैन रहे। उन्होंने कार्यशाला में छात्राओं को नौकरी की जरूरत के हिसाब से आकर्षक परिचय पत्र बनाना, इंटरव्यू मे महारथ हासिल करना सिखाया। साथ ही छात्राओं को उनके करियर मे सफल होने के लिए व्यावहारिक कौशल, साक्षात्कार तकनीक, संचार कौशल के बारे मे भी बताया। कार्यशाला के अंतिम दिन छात्राओं का मॉक इंटरव्यू हुआ।

लैब अटेंडेंट जय भगवान शर्मा हुए सेवानिवृत्त

महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग लैब में कार्यरत जय भगवान शर्मा को सेवानिवृत्त होने पर भावभीनी विदाई दी। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्या रचना अरोड़ा व समस्त शिक्षक एवं गैर शिक्षक वर्ग ने उनके सुखद भविष्य की मंगल कामना की।

पी.पी.टी प्रदर्शन प्रतियोगिता में छात्रा आरजू रही द्वितीय स्थान पर

अंतर महाविद्यालय पी.पी.टी प्रदर्शन प्रतियोगिता में छात्रा आरजू ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। प्रतियोगिता का विषय जल संरक्षण रहा।

जैव-विविधता समृद्धि

जैव-विविधता हमें पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए हमारी पर्यावरण के प्रति जिम्मेवारी को बढ़ाता है। अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस हर वर्ष 22 मई को मनाया जाता है। यह हर वर्ष अलग-अलग थीम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष की थीम ÷समझौते से कार्यवाही तक जैव-विविधता का पुनर्निर्माण है।÷ जिसका मुख्य उद्देश्य जैव-विविधता को फिर से स्थापित करना एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को इस दिशा में कार्यान्वित करने के लिए दबाव बनाना हैं। पृथ्वी पर संतुलन बनाए रखने के लिए जैव-विविधता बहुत आवश्यक है जिसके लिए कई समझौते किए गए है। उनमें से एक समझौते की अगर बात की जाए तो वह 'कुनमिंग-मोन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क' है यह आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था के भीतर सभी क्षेत्रों में जैव-विविधता से संबंधित सभी बिंदुओं पर विचार करता है उन पर तुरंत प्रभाव से कार्य करने के लिए सक्षम है यह एक बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय समझौता नहीं है यह प्रोटोकॉल हम जो आधुनिक प्रौद्योगिकी जीवन यापन कर रहे है उससे उत्पन्न जो भी जोखिम है उसे जैव-विविधता को बचाना ही इसका मुख्य कार्य है। इसक चार प्रमुख उद्देश्य है जिसमें जैव-विविधता का संरक्षण एवं पुर्नस्थापन, जैव-विविधता का सतत् उपयोग व सुनिर्श्चित करना, लाभों को उचित और समान रूप से सांझा करना, परिवर्तनकारी परिवर्तन सक्षम करना। इन सब के साथ हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी जागरूक होना आवश्यक है ताकि जीव-जंतुओं को बचाने के साथ-साथ हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित वातावरण एवं जैव-विविधता से परिपूर्ण जीवन दे सकें। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करन चाहिए। समय? पर इस तरह के प्रोटोकॉल हमें जागरूक करने के लिए जरूरी है। साथ ही इनका क्रियान्वयन होना विश्व के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

मीनाक्षी
सहायक प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग

Religious Places in Bhiwani

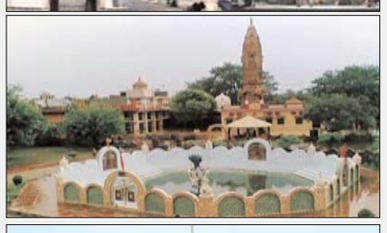

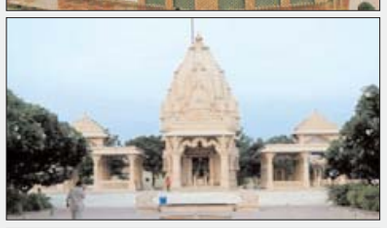

Bhiwani is one of the ancient places of history which was assumed to be found by Rajput King neem Singh and he named it after the name of his wife. But Bhiwani and adjoining places are showcasing some of the magnificent locations which suggest existence of human from pre Harappa Era in this region.

Even Pandanas visited the places near Bhiwani and contributed a lot in establishing temples and other religious places around Bhiwani. It has been ruled by many Hindu and Muslim kings and during the course of time every king has made different shrines and places of worship in this place. Among some are renowned while few are losing their significance due to speedy lifestyle. Here, focus has been said on all the religious places in Bhiwani to give efficient knowledge about them.

Temples and Shrines in Bhiwani

Bhiwani is known as city of temples and even called as mini Kashi due to presence of more than 300 temples in this religion. It is a well known destination for temples which are found in its arena and some of them are renowned places drawing devotees all through the year. Devsar Dham on Loharu road and Gauri Shankar temple are the two most visited religious places of attracted on the hillock which is 6.5 km away from main land. Especially during the period of navratri festival. This place is visited by many pilgrims. Gauri Shankar temple beholds the idol of Shiva-Parvati, Radha-krishna, and Laxmi Narayan.

hirapuri mandir, Khanki Baba ka Mandir, and Jogiwala mandir are also prominent religious places to visit in Bhiwani. These templed are situated in the city and they are easy to acess from any part of this city. Star Movement is one of the leading and prominent places to visit in Bhiwani. Situated in the region of Dinod, it is a memorial of Saint Tara Chand ji maharaja at Radhaswami Satsand. Shikharband Temple is also good location of tourism in Bhiwani, hence reflecting the art of ancient era.

Other Temples of Bhiwani

- Shri Rang Nath Mandir
- Shami Dayal Mandir
- Panchtirtha
- Shyamesar Tank
- Jain Temple in Bhiwani

Sakshi Kumari (B.A-II)

मुझे बेटी ही रहने दो

क्यूं मुझे 'बेटे सा' कहते हो,
क्या मेरा कोई वजूद नहीं ?
बनावट मेरी, कुदरती है,
क्यूं मुझे तुम अपनाते नहीं ?
समाज की जर्जर सोच की,
क्यूं खुशियां मेरी मोहताज हैं ?
बंदिशे परिवार की सिर्फ बेटी पर,
क्यूं जकड़ा कभी इनमें बेटे को नहीं ?
क्यूं मुझे 'बेटा सा' कहते हो,
क्या मेरा कोई वजूद नहीं ?
हक की लड़ाई लड़की लड़े,
क्यूं मेरा कोई अस्तित्व नहीं ?
कंधे से कंधा मिला कर चलना है?
क्यूं कदम दो आगे नहीं बढ़ सकती ?
अपने ही घर में अगले घर की सीख मिले,
क्यूं पराया घर फिर अपना कहेगा मुझे ?
क्यूं मुझे 'बेटा सा' कहते हो,
क्या मेरा कोई वजूद नहीं ?
सबकी खुशियों की बेड़ियां बेटी पहनें,
क्यूं जिम्मेवारी वो बेटों की नहीं ?
लाज पिता की बेटी की झुकी नजरों में,
क्यूं ये सीख बेटों के नहीं ?
अपना हिस्सा भी वो भाई को दे,
क्यूं ये अपनापन बहनों के लिए नहीं ??
क्यूं मुझे 'बेटा सा' कहते हो,
क्या मेरा कोई वजूद नहीं ?
बेटी अमानत है दूसरे घर की,
क्यूं कभी घर- जवाई बनता नहीं ?
मान, स्वाभिमान और पहचान सब बेटे का
क्यूं इन पर बेटी का हक नहीं ?
दादी की ख्वाहिश वारिस (पोते) की,
क्यूं रौनक पर उस बेटी का नाम नहीं ?
क्यूं मुझे 'बेटा सा' कहते हो,
क्या मेरा कोई वजूद नहीं ?

मोनिका (सत्र 2018)

विद्यायाः महत्त्वम्

विद्याः- 'विद ज्ञाने' धातोः 'क्यप्-टाप्-प्रत्ययोः 'विद्या' शब्दस्य निष्पत्तिर्भवति। अतः वेद्यन्ते ज्ञायन्ते धर्मार्थकाममोक्षाः अनया इति विद्या भवति। अथवा कस्यचिदपि विषयस्य 'विद्या' कथ्यते । वेद उपनिषद्दर्शन-साहित्यविज्ञानादीनां विषयाणाम् अध्ययनं यथार्थज्ञानं च 'विद्या' इति अभिधीयते ।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्- अस्मिन् जगति अनेके पदार्थाः सन्ति परन्तु तेषु पदार्थेषु विद्या एव सर्वश्रेष्ठं धनमस्ति । यतः विद्याधनम् एकं हि एतादृशं धनं लोके यत् व्ययतोऽपि वृद्धिं प्राप्नोति, संचयात् क्षयम् आयाति। इमां विशेषतां प्रतिपादयन् केनापि कविना कथितम-

''अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति
। व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।

विद्याधनं सर्वश्रेष्ठधनः- अन्यानि धनानि तु व्ययेन विशेषरूपेण वर्धते। सर्वेषु धनेषु इदं विद्याधनं सर्वश्रेष्ठं अस्ति । यतः न एनं चैराः चैरयितुं शक्नुवन्ति, न नृपः बलात् हरणं कर्तुं शक्तः, न च एनं भ्रातारः विभाजयितुं समर्थाः भवन्ति। तस्माद् एतत् विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।

''न चैरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वप्रधानम।।''

विद्यायाः महत्त्वमः- विद्यायाः एव धर्मार्थकाममोक्षेषु प्रवृत्तिः भवति। विद्याप्रकाशेन अज्ञानान्धकारः दूरीभवति। अनया एवं कर्त्तव्यस्य, उचितानुचितस्य सम्यक् ज्ञानं भवति। विद्या मनुष्यस्य सर्वविध-कल्याणं करोति। सा दुःखेषु विपत्तिषु मातृवत् नरस्य रक्षां करोति, पितृवत् नरं हिते योजयति, पत्नीवत् कष्टे अभिरमयति, लक्ष्मी तनोति, सर्वासु दिक्षु यशः कीर्तिञ्च पसारयति । वस्तुतः विद्या तु कल्पलतावत् सर्वान् मनोरथान् पूरयति । विद्याधनं सर्वद्रव्येषु अनुपमम् अस्ति । यतः इदं धनं सर्वथा अहार्यम, अनर्घ्यम, अक्षयम, अनश्वरम् अस्ति। अतः इदम् अतिविचित्रं धनं वर्तते-

''सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा।।''

विद्वान् सर्वत्र पूज्यतेः- विद्वांसः एव संसारस्य दुःखानि दूरीकुर्वन्ति । नृपाः अपि विदुषाम् पुरस्तात् नमन्ति । राज्ञां सम्मानं विशेषतः स्वदेशे एव भवति परंतु विदुषाम् आदरः सर्वत्र भवति । उक्तमप केनचित् कविना-

''विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते''

विद्याविहीनः पशुः- विद्ययैव ज्ञानं भवति। विद्याविहीनः मनुष्यः पशुवत् भवति। तेषां विद्या नास्ति वस्तुतः ते भुवि भारभूताः सन्ति। विद्याया हृदये गुणाः जायन्ते। विद्याञ्जनश्लाकया अज्ञान तिमिरः नश्यति । विद्या कुरुपाणां रूपम, सुगुप्तं धनं वर्तते, विद्या विदेशे बन्धुजनः भवति, विद्या नृपेषु अपि पूज्या भवति, इयं परा देवता अस्ति । विद्यां विना नरः साक्षात् पुच्छविषाणहीनः पशुः एवास्ति ।

न चैर हार्यम न च राज हार्यम।
न भ्रात्रभाज्यम न च भारकारी ।।
व्यये कृते वर्धते नित्यं ।
विद्या धनं सर्वे धनं प्रधानम् ।।

मोनिका(बी.ए. तृतीया)

तानपूरा

तानपूरा भारतीय संगीत का लोकप्रिय तंतवाद्य है। तानपूरा का प्रयोग शास्त्रीय संगीत से लेकर हर तरह के संगीत में किया जाता है तानपूरे में चार तार होते है। इसलिए इसे तंतवाद्य कहा जाता है।

तानपूरा के मुख्य छः अंग होते है-

तुम्बा- यह लौकी से बना होता है जो डांड के नीचे के भाग से जुड़ा होता है।

तबली- गोल लौकी के ऊपर के भाग को काटकर खोखले भाग को लकड़ी के एक टुकड़े से ढंक दिया जाता है। उसे तबली कहते है।

घुड़च (ब्रिज)- तबली के ऊपर हड्डी से बना ब्रिज लगाया जाता है।

धागा- घुड़च और तानपूरे की तार की बीच धागे का प्रयोग झनकार के लिए किया जाता है।

कील- तारों को बांधने के लिए तुम्बे के नीचे के भाग में कील लगाई जाती है।

मनका- मोती अथवा हाथी दांत के छोटे-छोटे टुकड़े तानपुरे के चारों तार में घुड़च और कील के मध्य पिराए जाते है जिन्हें मनका कहते है। इनसे स्वरों के सूक्ष्म अंतर को ठीक किया जाता है।

तानपूरा को हम 'तम्बूरा' भी कहते है। ऐसा माना जाता है कि तानपूरे का निर्माण प्राचीन काल में तुम्बरू नामक गंधर्व ने किया था। इस वाद्य में पहले एक तार था, फिर दो, फिर तीन, फिर चार तार हुए। आधुनिक काल में पांच या छः तार वाले तानपूरे भी देखें जा सकते है।

तानपुरा का शास्त्रीय संगीत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। तानपुरे का स्वर मधुर होता है, जो सांगीतिक वातावरण की सुष्टि में

सहायक होता है। तानपुरे की मधुर झंकार स्वतः संगीतज्ञ को गाने के लिए प्रेरित करती है। तानपुरे से गाने में अलौकिक आनंद की प्राप्ति होती है। तानपुरे का प्रयोग गायन तथा वादन के साथ स्वर देने में होता है। तानपुरे से गायन में संगीतज्ञ कण, मीड तथा अन्य गायकी का प्रयोग सुगमता से कर सकता हैं।

मनीषा
सहायक प्रोफेसर संगीत विभाग

Good Friday

Good Friday, a day of major religious significance is observed to remember jesus christ's crucifixion and resurrection. It is the Friday before Easter.

History

As per the New Testament, on this day Jesus was crucified by the Romans. Jesus was condemned of blasphemy as he claimed himself to be the son of God. Jesus' claims had irked the Jewish religious leaders as a result of which they took him to the Romans. Roman Leader Pontius Pilate, has sentenced Jesus Christ to crucifixion. On the day of crucifixion, Jesus carried the cross to the site of execution which is called the place of the skull or Calvary in Latin. He was nailed to the cross he was carrying by his wrists and feet. He was left in that manner on the cross until he died.

On this day, Christians honour the sacrifices of Jesus, the way he was crucified his sufferings, the tortures he went through

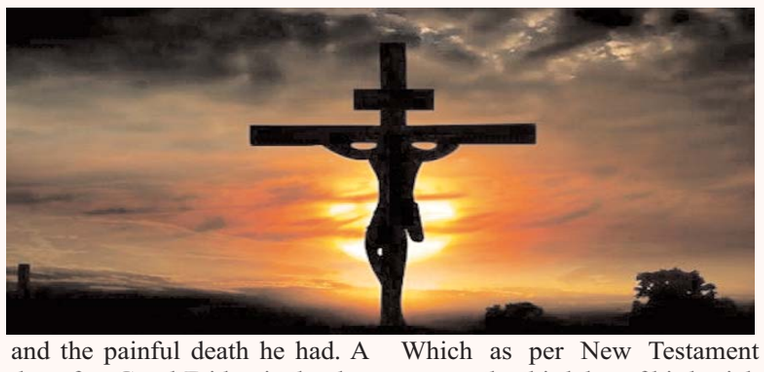

and the painful death he had. A day after Good Friday is the day of Celebration, or Easter. This day Commemorates the resurrection of Jesus from the dead. Which as per New Testament was on the third day of his burial.

Pooja Lamba
Assistant Professor
Department of English

Shining Star of Dawn

Dawn ethereal Aura divine Calmness prevailing Soothing senses Gratitude in heart Morning treasure Breath so pure Greenery enticing Enriching soul Golden hue Overpowering feel View panoramic Reflection dewy Murmuring sounds whispering beetle Chirping birds Cuckoo hiding Squirrel gnawing Nature calling Triumph aloha Sun Salutation.....

Prof. Sonia Malik
Senior Professor, MDU, Rohtak

The Bard's Corner: Shakespeare Special

The special edition is dedicated to the timeless works of William Shakespeare. In this page we embark on a journey through the world of the Bard, exploring his plays, sonnets, and the lasting impact he has had on literature and culture. From tragic tales to comedic escapades, Shakespeare's genius continues to captivate audiences across the globe.

Shakespeare's Life and Legacy

William Shakespeare, often referred to as the Bard of Avon, is widely regarded as one of the greatest playwrights in history. Born in Stratford-upon-Avon, England, in 1564, Shakespeare's life and works continue to captivate audiences and scholars alike.

Early Life and Education:

Shakespeare was born into a middle-class family, the son of John Shakespeare, a glove-maker, and Mary Arden. Despite the lack of extensive records from his early years, it is believed that he received a solid education at the local grammar school, where he would have studied Latin and the classics.

Marriage and Family:

In 1582, at the age of 18, Shakespeare married Anne Hathaway, who was eight years his senior. They had three children: Susanna and twins Hamnet and Judith. Hamnet's early death in 1596 would later inspire one of Shakespeare's most poignant plays, "Hamlet."

London and Theatrical Career:

In the late 1580s, Shakespeare left Stratford-upon-Avon and moved to London, where he became involved in the theater scene. He joined the Lord Chamberlain's Men, a prominent acting company, which later became the King's Men under the patronage of King James I. Shakespeare's career as a playwright and actor flourished during this time, and he became a leading figure in the vibrant theatrical world of Elizabethan England.

Authorship and Controversies:

Although Shakespeare's authorship of the plays and sonnets attributed to him is widely accepted, there have been persistent debates and theories questioning his authorship. Some skeptics propose alternative candidates, such as Francis Bacon or Christopher Marlowe, as the true authors of the works. However, the majority of scholars and experts overwhelmingly support Shakespeare as the author based on historical evidence and analysis of the language, style, and thematic consistency found in his works.

Enduring Legacy:

Shakespeare's impact on literature, language, and culture is immeasurable. His works have been translated into numerous languages and performed in theaters worldwide. The themes and characters he created continue to resonate with audiences of all ages and cultures. Shakespeare's words have permeated our everyday language, with countless phrases and expressions still in use today. His contributions to drama and storytelling have shaped the course of literature and continue to inspire playwrights, poets, and artists across the globe.

Exploring the Plays

Shakespeare's plays are a testament to his remarkable talent and profound understanding of human nature. They continue to be performed and studied worldwide, captivating audiences with their timeless themes and captivating characters. Let's embark on a journey through some of Shakespeare's most celebrated works, exploring their key elements and enduring impact.

1. Romeo and Juliet: "Romeo and Juliet" is a tragic love story set in Verona, Italy. It explores the themes of love, fate, and the consequences of impulsive actions. The play showcases Shakespeare's ability to blend romance and tragedy, as well as his skill in creating unforgettable characters like Romeo, Juliet, and Mercutio.

2. Macbeth: "Macbeth" delves into the corrupting nature of power, ambition, and the destructive consequences of unchecked ambition. The play follows the titular character, a Scottish general, as he succumbs to his own desires and commits heinous acts to secure the throne. Shakespeare's portrayal of the human psyche and the descent into madness is masterful in this gripping tragedy.

3. Hamlet: Considered one of Shakespeare's greatest works, "Hamlet" explores themes of revenge, mortality, and the complexity of human existence. The play follows Prince Hamlet as he grapples with his father's murder and his duty to avenge it. Known for its profound soliloquies, including the iconic "To be or not to be," "Hamlet" showcases Shakespeare's skill in crafting complex characters and delving into existential questions.

4. A Midsummer Night's Dream: "A Midsummer Night's Dream" is a whimsical comedy filled with mistaken identities, magical enchantments, and love triangles. Set in a fantastical woodland realm, it explores themes of love, illusion, and the power of the imagination. Shakespeare's mastery of language and his ability to intertwine multiple storylines create a delightful and enchanting theatrical experience.

5. Othello: "Othello" is a tragedy that examines themes of jealousy, manipulation, and the destructive power of doubt. The play revolves around the noble Moorish general Othello, whose marriage to Desdemona is manipulated by the villainous Iago. Through its exploration of racial prejudice and the vulnerability of trust, Shakespeare delves into the complexities of human relationships and the tragic consequences of unfounded suspicions.

These are just a few examples of Shakespeare's diverse range of plays, each showcasing his remarkable ability to capture the human experience. Whether exploring love, power, tragedy, or comedy, his plays continue to resonate with audiences across cultures and time periods.

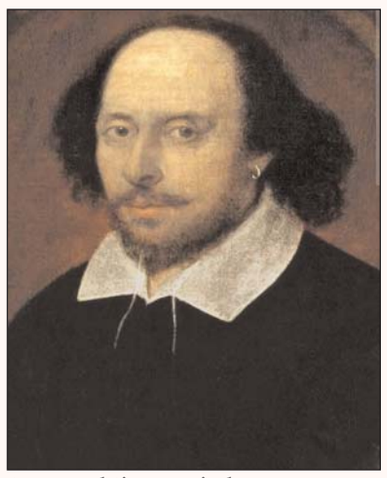

Shakespeare's works are characterized by rich language, poetic imagery, and unforgettable characters. His plays employ various dramatic techniques, such as soliloquies, asides, and dramatic irony, to engage the audience and convey the intricacies of the human condition. Shakespeare's plays are renowned for their exploration of universal themes that transcend time and place, making them enduring classics that continue to be celebrated and performed on stage and screen.

By immersing ourselves in Shakespeare's plays, we gain insight into the complexities of human nature, the power of language, and the enduring impact of his genius.

Unraveling the Sonnets

Shakespeare's sonnets are a collection of 154 poems that were first published in 1609. These sonnets have captivated readers for centuries and continue to be studied and analyzed today. They offer a profound exploration of love, beauty, mortality, and the complexities of human relationships.

Structure:- Shakespeare's sonnets follow a specific structure known as the Shakespearean sonnet or the English sonnet. Each sonnet consists of 14 lines written in iambic pentameter, which is a metrical pattern containing five pairs of unstressed and stressed syllables per line. The sonnets are divided into three quatrains (four-line stanzas) and end with a rhyming couplet (two consecutive lines with the same rhyme).

Themes: Love: Love is a predominant theme in Shakespeare's sonnets, and they present a wide range of emotions associated with it. The speaker often explores the nature of love, from the ecstasy of being in love to the pain of unrequited love. The sonnets also touch upon the themes of infidelity, jealousy, and the passage of time's effect on love.

Beauty: Shakespeare's sonnets frequently explore the concept of beauty, both in terms of physical attractiveness and the enduring beauty of poetry itself. The speaker often praises the beauty of the Fair Youth, a young man who is the primary subject of many sonnets, and compares it to the transient nature of youth and physical appearance.

Time and Mortality: The passage of time and its impact on human existence is a recurring theme in the sonnets. The speaker reflects on the fleeting nature of youth, the inevitability of aging, and the transience of beauty. These meditations on mortality serve as a reminder of the brevity of human life and the need to seize the present moment.

Identity and Self-Expression: Shakespeare's sonnets delve into questions of identity and self-expression. The poet explores the complexities of his own emotions, desires, and experiences, often blurring the lines between reality and fiction. The speaker grapples with conflicting feelings and societal expectations, and through the sonnets, Shakespeare presents a nuanced exploration of the self.

Enduring Fascination: The enduring fascination with Shakespeare's sonnets lies in their universal themes and the depth of emotions they express. They capture the complexities of human experience in a way that resonates with readers from different cultures and time periods. The sonnets offer a profound exploration of love, beauty, and the passage of time, allowing readers to reflect on their own lives and emotions.

Scholars and readers continue to unravel the mysteries of these poetic masterpieces, studying the sonnets' language, imagery, and historical context. There is ongoing debate about the identity of the Fair Youth and the Dark Lady, two significant figures in the sonnets, as well as the biographical elements in Shakespeare's poetry.

Shakespeare in Pop Culture

Shakespeare's works have had a significant influence on pop culture throughout history. His plays, sonnets, and characters have been referenced, adapted, and reimagined in various forms of media, including film, television, music, and literature. Here are some notable examples of Shakespeare in pop culture:

Film adaptations: Many popular Bollywood movies based on Shakespeare's evergreen plays.

Maqbool'

This 2003 movie featuring Irrfan, Tabu, Pankaj Kapoor, Naseeruddin Shah, Om Puri and Piyush Mishra is based on Shakespeare's 1611 play 'Macbeth'. This was the first Shakespeare's play (out of a trilogy) which was adapted for screen by Vishal Bharadwaj.

Haider'

The third Shakespeare's play to be made into a Bollywood movie by Bharadwaj, 'Haider' is inspired by the bard's 'Hamlet.

Ram Leela'

Sanjay Leela Bhansali's 'Ram Leela', featuring Deepika Padukone and Ranveer Singh in the lead roles, is also based on the play 'Romeo and Juliet'.

Omkara'

'Othello' was written by Shakespeare in roughly 1603. This tragedy play was adapted for screen by Vishal Bharadwaj in 2006 and the movie won three National Awards!

Literary references: Numerous authors have paid homage to Shakespeare in their works. For instance, Aldous Huxley's dystopian novel "Brave New World" takes its title from a line in "The Tempest," and Margaret Atwood's "Hag-Seed" is a contemporary retelling of "The Tempest."

Music: Shakespeare's works have also inspired countless songs and musical compositions. Examples include "Love Story" by Taylor Swift, "Exit Music (For a Film)" by Radiohead, and "West Side Story" soundtrack composed by Leonard Bernstein.

These are just a few examples of how Shakespeare's influence pervades popular culture. His timeless themes, memorable characters, and powerful storytelling continue to captivate and inspire audiences across various art forms.

Quotable Shakespeare

Here are some famous quotes from the works of William Shakespeare:

- "To be, or not to be: that is the question." - Hamlet
- "All the world's a stage, and all the men and women merely players." - As You Like It
- "Love looks not with the eyes, but with the mind." - A Midsummer Night's Dream
- "What's in a name? That which we call a rose by any other name would smell as sweet." - Romeo and Juliet
- "The course of true love never did run smooth." - A Midsummer Night's Dream
- "If music be the food of love, play on." - Twelfth Night
- "It is not in the stars to hold our destiny but in ourselves." - Julius Caesar
- "All that glitters is not gold." - The Merchant of Venice
- "The better part of valor is discretion." - Henry IV, Part 1
- "To thine own self be true." - Hamlet

These are just a few examples of the many memorable quotes Shakespeare has given us. His works are rich with beautiful language, profound insights, and timeless wisdom.

"Though time may claim its toll on mortal flesh, the timeless words of Shakespeare endure. From love's sweet beginnings to tragic ends, his plays and sonnets continue to captivate hearts and minds across the ages. So let us raise a quill to the Bard, the master of verse and drama, and celebrate his immortal legacy that resonates with the essence of humanity. As we bid adieu to this Shakespeare special, may his words forever echo in our souls and inspire us to tread the stage of life with passion and grace. Farewell, dear readers, till we meet again in the enchanting realms of literature."

Richa Arya
(Assistant Professor, Department of English)

सद्भावना का पवित्र त्योहार: ईद-उल-फितर

ईद-उल-फितर , मुस्लिम समुदाय के लोगों के प्रमुख त्योहारों में से एक है। ईद-उल-फितर का यह पर्व रमजान के 30 रोजों के बाद चांद देखकर मनाया जाता है। वैसे तो इस पर्व को मनाये जाने के कई मत प्रचलित है लेकिन जो इस्लामिक मान्यता सबसे अधिक प्रचलित है उसके अनुसार इसी दिन पैगम्बर मोहम्मद साहब ने बद्र के युद्ध में विजय प्राप्त की थी। तभी से इस पर्व का आरंभ हुआ और दुनिया भर के मुसलमान इस दिन के जश्न को बड़ी ही धूम-धाम के साथ मनाने लगे। वास्तव में ईद-उल-फितर का यह त्योहार भाईचारे और प्रेम को बढ़ावा देने वाला त्योहार है क्योंकि इस दिन को मुस्लिम समुदाय के लोग दूसरे धर्म के लोगों के साथ भी मिलकर मनाते है और उन्हें अपने घरों पर दावत में आमंत्रित करते तथा अल्लह से अपने परिवार और दोस्तों के सलामती और बरकत की दुआ करते है। यहीं कारण है कि ईद-उल-फितर के इस त्यौहार को इतने धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। मुसलमानों का त्योहार ईद रमजान का चांद डूबने और ईद का चांद नजर आने पर उसके अगले दिन चांद की पहली तारीख को मनाया जाता है। ईद उल फितर के अवसर पर पूरे महीने अल्लाह के मोमिन बंदे अल्लाह की इबादत करते हैं रोज़ा रखते हैं और कुरान की तिलावत (इबादत) करके अपनी आत्मा को शुद्ध करते हैं जिसका अज्र या मजदूरी मिलने का दिन ही ईद का दिन कहलाता है जिसे उत्सव के रूप में पूरी दुनिया के मुसलमान बडे हर्षोल्लास से मनाते हैं।ईद-उल-फितर का सबसे अहम मकसद एक और है कि इसमें गरीबों को फितरा देना वाजिब है जिससे वो लोग जो ग़रीब हैं मजबूर हैं अपनी ईद मना सकें नये कपडे पहन सकें और समाज में एक दूसरे के साथ खुशियां बांट सकें ।ईद भाई चारे व आपसी मेल का त्यौहार है । ईद के दिन लोग एक दूसरे के दिल में ह्यार बढ़ाने और नफरत को मिटाने के लिए एक -दूसरे से गले मिलते हैं।उपवास की समाप्ति की खुशी के अलावा इस ईद में मुसलमान अल्लाह का शुक्रिया अदा इसलिए भी करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें महीने भर के उपवास रखने की शक्ति दी।ईद के दौरान बढ़िया खाने के अतिरिक्त नए कपड़े भी पहने जाते हैं और परिवार और दोस्तों के बीच तोहफों का आदान-प्रदान होता है। सिवैया इस त्योहार का सबसे महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थ है जिसे सभी बड़े चाव से खाते हैं।ईद के दिन मस्जिदों में सुबह की प्रार्थना से पहले हर मुसलमान का फर्ज होता है कि वो दान या भिक्षा दे। इस दान को ज़कात उल-फ़ितर कहते हैं। यह दान दो किलोग्राम कोई भी प्रतिदिन खाने की चीज का हो सकता है। इस्लाम धर्म में एक अच्छा इंसान होने के लिए केवल इस्लाम धर्म का होना ही काफी नहीं है , इस धर्म में 5 नियमों का पालन करना अनिवार्य है - ईमान, नमाज अदा करना, हज की यात्रा , रोजा और जकात .अरब में पैगम्बर हजरत मोहम्मद ने देखा यहाँ हर व्यक्ति एक दुसरे से दूर हो रहा है, पूरा अरब गरीब और अमीर दो भागो में बंट गया है , तब सभी को एकजुट करने के लिए मोहम्मद साहब ने विचार किया और सभी को एक नियम का पालन करने को कहा, जिसका नाम रोजा रखा । उन्होंने कहा पूरे दिन हम कुछ भी नहीं खाएंगे और पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं करेंगे , कोई भी पकवान हो हमें उसका त्याग करना है ।

डॉ0 डिंपल अग्रवाल
सहायक प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान विभाग)

साधक शिरोमणि श्री हनुमान का भारत भूमि पर अवतरण....

हनुमान जन्मोत्सव एक हिन्दू पर्व है। यह चैत्र माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन हनुमानजी का जन्म हुआ था यह माना जाता है।भगवान हनुमान का जन्म अंजनेरी पर्वत पर हुआ था। उनकी माता ने संतान प्राप्ति के लिए 12 वर्ष तक भगवान शिव से प्रार्थना की थी। ऐसा कहा जाता है कि भगवान हनुमान भगवान शिव का प्रतिबिंब हैं। भगवान हनुमान भगवान राम के बहुत बड़े अनुयायी थे और उन्होंने लंका पर विजय पाने में उनकी मदद की थी। वह सभी देवताओं में सबसे बलशाली और शक्तिशाली देवों में से एक हैं। उनका जन्म भारत भूमि के लिए एक महान गौरव था और कलयुग के अंत तक हनुमान जी धरती पर रहेंगे। दक्षिण भारतीय राज्यों में हनुमान जन्मोत्सव को धनु के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देश भर में विभिन्न कार्यक्रम मनाए जाते हैं। लोग प्रार्थना करते हैं और मंदिरों में जाते हैं। भगवान हनुमान अपार ज्ञान, शक्ति के स्रोत हैं और उन्हें 'संकटमोचक' कहा जाता है (क्योंकि वे मनुष्य को सभी भय और रोगों से बचाते हैं। बजरंगबली के प्रति अपनी भक्ति और समर्पण अर्पित करने के लिए हम हनुमान जन्मोत्सव मनाते हैं। यह दिन हनुमान जी के जन्म का प्रतीक है और लोग इस दिन मंदिरों में जाते हैं और उनके कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं। वहीं कुछ लोग अपने घरों पर ही पूजा-अर्चना करके पवनसुत हनुमान का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। हनुमान जी को कलयुग में सबसे प्रभावशाली देवताओं में से एक माना जाता है।विष्णु जी के राम अवतार के बाद रावण को दिव्य शक्ति प्रदान हो गई। जिससे रावण ने अपनी मोक्ष प्राप्ति हेतु शिवजी से वरदान माँगा की उन्हें मोक्ष प्रदान करने हेतु कोई उपाय बताए। तब शिवजी ने राम के हाथों मोक्ष प्रदान करने के लिए लीला रची। शिवजी की लीला के अनुसार उन्होंने हनुमान के रूप में जन्म लिया ताकि रावण को मोक्ष दिलवा सके। इस कार्य में रामजी का साथ देने हेतु स्वयं शिवजी के अवतार हनुमान जी आये थे, जो की सदा के लिए अमर हो गए। रावण के वरदान के अनुसार उन्हें मृत्यु के साथ साथ उसे मोक्ष भी दिलवाया।हनुमान जन्मोत्सव को लोग हनुमान मंदिर में दर्शन हेतु जाते है। कुछ लोग व्रत भी धारण कर बड़ी उत्सुकता और ऊर्जा के साथ समर्पित होकर इनकी पूजा करते है। यह कहा जाता है कि ये बाल ब्रह्मचारी थे अतः इन्हे जनेऊ भी पहनाई जाती है। हनुमान जी की मूर्तियों पर सिन्दूर और चांदी का वर्क चढ़ाने की परम्परा है। कहा जाता है राम की लम्बी आयु के लिए एक बार हनुमान जी अपने पूरे शरीर पर सिन्दूर चढ़ा लिया था और इसी कारण उन्हें और उनके भक्तों को सिन्दूर चढ़ाना बहुत अच्छा लगता है जिसे चोला कहते है। संध्या के समय दक्षिण मुखी हनुमान मूर्ति के सामने शुद्ध होकर मंत्र जाप करने को अत्यंत महत्व दिया जाता है। हनुमान जन्मोत्सव पर रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड पाठ को पढ़ना भी हनुमानजी को प्रसन्न करता है। सभी

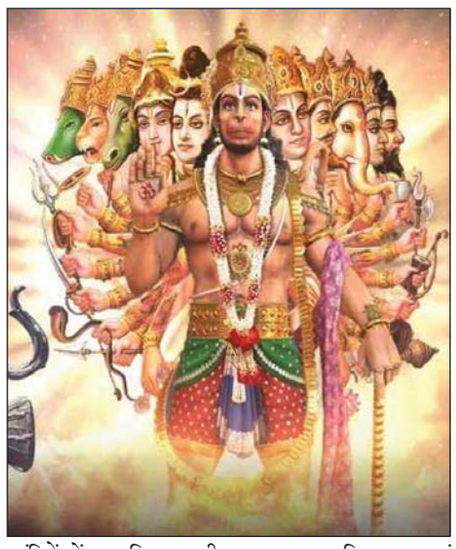

मंदिरों में इस दिन तुलसीदास कृत रामचरितमानस एवं हनुमान चालीसा का पाठ होता है। स्थान - स्थान पर भंडारे आयोजित किये जाते है। तमिलनाडु व केरल में हनुमान जन्मोत्सव मार्गशीर्ष माह की अमावस्या को तथा उड़ीसा में वैशाख महीने के पहले दिन मनाया जाता है। वहीं कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश में चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख महीने के 10वें दिन तक यह त्योहार मनाया जाता है। भगवान हनुमान के गुरु इनकी माता, भगवान शंकर, भगवान सूर्य और ऋषि मातंग थे।इन्द्र के वज्र से हनुमान जी की ठुड्डी (संस्कृत में हनु) टूट गई थी। इसलिए उनको हनुमान का नाम दिया गया। इसके अतिरिक्त ये अनेक नामों से प्रसिद्ध है जैसे बजरंग बली, मारुति, अंजनी सुत, पवन पुत्र, संकट मोचन, केसरी नंदन, महावीर, कपीस, शंकर सुवन आदि।सनातन धर्म में हनुमान जी को वीरता, भक्ति और साहस की प्रतिमूर्ति माना जाता है। शिव जी के रुद्रावतार माने जाने वाले हनुमान जी को बजरंगबली, पवन पुत्र, मारुति नंदन, केसरी नन्दन, महावीर आदि नामों से भी जाना जाता है।मान्यता है कि हनुमान जी अजर-अमर है ।हनुमान जी का प्रतिदिन ध्यान करने और उनके मंत्र जाप करने से मनुष्य के सभी भय दूर होते हैं। कहा जाता है कि हनुमान चालीसा के पाठ से भय दूर होता है, क्लेश मिटते हैं। इसके गंभीर भावों पर विचार करने से मन में श्रेष्ठ ज्ञान के साथ भक्ति भाव जागृत होता है। श्री हनुमान अतुल बल के स्वामी थे। उनके अंग वज्र के समान शक्तिशाली थे। अतः उन्हें 'वज्रांग' नाम दिया गया, जो बोलचाल में बजरंग बन गया। यह बजरंग केवल गदाधारी महाबली ही नहीं हैं, बल्कि विलक्षण और बहुआयामी मानसिक और प्रखर बौद्धिक गुणों के अद्भुत धनी भी हैं। थकावट उनसे कोसों दूर रहती थी। यदि कोई उनसे विश्राम की बात करता तो उनका उत्तर होता था- मैंने श्रम ही कहां किया, जो मैं विश्राम करूं? आजकल भारत में प्रचलित हो चला- 'कार्यभार' शब्द ही गलत है। जब-जब गहरी रुचि और भक्ति के साथ कोई कार्य किया जाता है, तो वह वजन नहीं होता, उससे आनंद का सृजन होता है। समर्पण-भाव से की गई सेवा सुख देती है और संकुचित स्वार्थवश किया गया काम तनाव पैदा करता है।राम-सुग्रीव मैत्री के रचनाकार हनुमान थे। वे द्वेष रहित, निःस्वार्थ तथा हितैषी सलाहकार थे। रावण के छोटे भाई विभीषण को शरण प्रदान करने के प्रश्न पर हनुमान की सलाह ने इतिहास बदल दिया। विवेक, ज्ञान, बल, पराक्रम, संयम, सेवा, समर्पण, नेतृत्व संपन्नता आदि विलक्षण गुणों के धनी होने के बावजूद उनमें रत्ती भर अहंकार नहीं था। अप्रतिम प्रतिभा संपन्न होने के कारण समय-समय पर वे रामदूत के रूप में भेजे गए और अपने उद्देश्य में सदैव सफल होकर लौटे। वे मां सीता की खोज तथा लंका पराभव के सफल महानायक ही नहीं, सुशासित राम-राज्य के पुरोधा और कूट-पुरोहित भी थे। वे व्याकरण और मधुर संगीत के विशेषज्ञ थे। उनके बारे में वाल्मीकि रामायण में महर्षि अगस्त्य से कहलाया गया है- 'पूर्ण विधाओं के ज्ञान तथा तपस्या के अनुष्ठान में वे देवगुरु बृहस्पति की बराबरी करते हैं। कई बार उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर 'राम-काज' संपन्न किया।यद्यपि शक्ति, गति और मति में उनके जैसा दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। इन सभी का उपयोग उन्होंने राम-रति के लिए किया, यह बात सर्वोपरि है। श्री हनुमान वाणी-कौशल के श्रेष्ठतम स्वामी थे। कहा जाता है कि प्रथम भेंट में ही श्री राम हनुमान की शिष्ट, सुहानी, व्याकरणसम्मत तथा मधुर बातचीत से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने लक्ष्मण से कह दिया था कि यह व्यक्ति चारों वेदों का पंडित लगता है। हनुमान को राम जैसा पारखी मिल गया। भारत का नया इतिहास बन गया। वज्रांगता, विद्वता और सच्चरित्रता जब अहंकाररहित समाज को समर्पित होती है तो एक नए युग का सृजन होता है। श्री हनुमान एक महान दार्शनिक भी थे। वे विभिन्न पंथों के समन्वय में विश्वास करते थे। श्रीराम समय-समय पर उनसे इस संबंध में भी सलाह लिया करते थे।एक बार राम ने पूछ लिया- हनुमान तुम बता सकते हो कि तुम कौन हो? यह दर्शन का कठिनतम प्रश्न है। इसके उत्तर में हनुमान रचित श्लोक इस प्रकार है-

देहदृष्ट्या तु दासोऽहं जीव दृष्ट्या त्वदंशकः।
आत्मदृष्ट्वा त्वमेवाहमिति में निश्चिता मतिः।।

देह दृष्टि से मैं आपका दास हूं और जीवन दृष्टि से मैं आपका अंश हूं तथा परमार्थ रूपी आत्मदृष्टि से देखा जाए तो जो आप हैं, वही मैं हूं- ऐसी मेरी निश्चित धारणा है।उत्कृष्ट भक्ति के पर्याय श्री हनुमान ने कभी अपनी मुक्ति नहीं चाही। राम का यह श्रेष्ठतम आराधक हमारे हृदयों में सदैव अमर है।

कुमुद
सहायक प्रवक्ता (हिंदी विभाग)

हमारी संस्कृति की पहचान: बैसाखी पर्व

नए दौर, नए युग की शुरुआत सत्यता, कर्तव्यता हो सदा साथ।
बैसाखी का यह सुंदर पर्व ,सदैव याद दिलाता है मानवता का पाठ।। '

बैसाखी का अर्थ - वैशाख माह का त्यौहार है। यह वैशाख सौर मास का प्रथम दिन होता है। बैसाखी, वैशाखी का ही अपभ्रंश है।इस दिन गंगा नदी में स्नान का बहुत महत्व है। हरिद्वार और ऋषिकेश में बैसाखी पर्व पर भारी मेला लगता है।बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में संक्रमण करता है । इस कारण इस दिन को मेष संक्रान्ति भी कहते है। इसी पर्व को विषुवत संक्रान्ति भी कहा जाता है। बैसाखी पारम्परिक रूप से प्रत्येक वर्ष 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है। बैसाखी मुख्य रूप से सिख लोग मनाते हैं। यह त्योहार खालसा के गठन का प्रतीक है. गुरु गोबिन सिंह ने 1699 में वैसाखी के दिन खालसा की स्थापना की. इस दिन गुरु गोबिंद सिंह ने सभी जातियों के बीच के भेद भाव को समाप्त कर दिया और सभी मनुष्यों को समान घोषित किया.यह त्योहार हिन्दुओं, बौद्ध और सिखों के लिए महत्वपूर्ण है। वैशाख के पहले दिन पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के अनेक क्षेत्रों में बहुत से नव वर्ष के त्यौहार जैसे जुड़ शीतल, पोहेला बोशाख, बोहाग बिहू, विशु, पुथण्डु मनाये जाते हैं। इस दिन पंजाब का परपरागत नृत्य भांगड़ा और गिद्दा किया जाता है।शाम को आग के आसपास इकट्ठे होकर लोग नई फसल की खुशियाँ मनाते हैं। पूरे देश में श्रद्धालु गुरुद्वारों में अरदास के लिए इकट्ठे होते हैं। मुख्य समारोह आनन्दपुर साहिब में होता है, जहाँ पन्थ की नींव रखी गई थी।सुबह 4 बजे गुरु ग्रन्थ साहिब को समारोहपूर्वक कक्ष से बाहर लाया जाता है।दूध और जल से प्रतीकात्मक स्नान करवाने के बाद गुरु ग्रन्थ साहिब को तख्त पर बैठाया जाता है। इसके बाद पंच ह्यारे 'पंचबानी' गाते हैं। दिन में अरदास के बाद गुरु को कड़ा प्रसाद का भोग लगाया जाता है।प्रसाद लेने के बाद सब लोग 'गुरु के लंगर' में शामिल होते हैं। श्रद्धालु इस दिन करसेवा करते हैं। दिनभर गुरु गोविन्द सिंह और पंच प्यारों के सम्मान में शबद् और कीर्तन गाए जाते हैं । बैसाखी के पर्व की शुरुआत भारत के पंजाब प्रांत से हुई है और इसे रबी की फसल की कटाई शुरू होने की सफलता के रूप में मनाया जाता है। पंजाब और हरियाणा के अलावा उत्तर भारत में भी बैसाखी के पर्व का बहुत महत्व है।

संतों की वाणी में प्रमाण मिलता है की सच खंड यानि सतलोक में सदा वसंत जैसा माहौल रहता है तथा सदा वैसाखी रहती है, वहाँ केवल सुख ही सुख है किसी भी प्रकार का दुख नहीं है। प्रकृति का एक नियम है कि जब भी किसी जुल्म,

अन्याय, अत्याचार की पराकाष्ठा होती है, तो उसे हल करने अथवा उसके उपाय के लिए कोई कारण भी बन जाता है। इसी नियमाधीन जब मुगल शासक औरंगजेब द्वारा जुल्म, अन्याय व अत्याचार की हर सीमा लाँघ, श्री गुरु तेग बहादुरजी को दिल्ली में चाँदनी चौक पर शहीद कर दिया गया, तभी गुरु गोविंदसिंहजी ने अपने अनुयायियों को संगठित कर खालसा पंथ की स्थापना की जिसका लक्ष्य था धर्म व नेकी (भलाई) के आदर्श के लिए सदैव तत्पर रहना। पुराने रीति-रिवाजों से ग्रसित निर्बल, कमजोर व साहसहीन हो चुके लोग, सदियों की राजनीतिक व मानसिक गुलामी के कारण कायर हो चुके थे। निम्न जाति के समझे जाने वाले लोगों को जिन्हें समाज तुच्छ समझता था, दशमेश पिता ने अमृत चखाकर सिंह बना दिया। इस तरह 13 अप्रैल,1699 को श्री केसगढ़ साहिब आनंदपुर में दसवें गुरु गोविंदसिंहजी ने खालसा पंथ की स्थापना कर अत्याचार को समाप्त किया।उन्होंने सभी जातियों के लोगों को एक ही अमृत पात्र (बाटे) से अमृत चखा पाँच प्यारे सजाए। ये पाँच प्यारे किसी एक जाति या स्थान के नहीं थे, वरन् अलग-अलग जाति, कुल व स्थानों के थे, जिन्हें खंडे बाटे का अमृत चखाकर इनके नाम के साथ सिंह शब्द लगा। अज्ञानी ही घमंडी नहीं होते, 'ज्ञानी' को भी अक्सर घमंड हो जाता है। जो परिग्रह (संचय) करते हैं उन्हें ही घमंड हो ऐसा नहीं है, अपरिग्रहियों को भी कभी-कभी अपने 'त्याग' का घमंड हो जाता है। अहंकारी अत्यंत सूक्ष्म अहंकार के शिकार हो जाते हैं। ज्ञानी, ध्यानी, गुरु, त्यागी या संन्यासी होने का अहंकार कहीं 'यादा प्रबल हो जाता है। यह बात गुरु गोविंद सिंह जी जानते थे। वैसाखी परंपरागत रूप से सिख नव वर्ष रहा है। खालसा सम्वत के अनुसार, खालसा कैलेंडर का निर्माण खालसा -1 वैसाख 1756 विक्रमी (30 मार्च 16 99) के दिन से शुरू होता है। यह पूरे पंजाब क्षेत्र में मनाया जाता है। वैसाखी पंजाब के लोगों के लिए फसल कटाई का त्योहार है। पंजाब में, वैसाखी रबी फसल के पकने का प्रतीक है। इस दिन किसानों द्वारा एक धन्यवाद दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिससे किसान, प्रचुर मात्रा में उपजी फसल के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और भविष्य की समृद्धि के लिए भी प्रार्थना करते हैं। सिखों और पंजाबी हिंदुओं द्वारा फसल त्योहार मनाया जाता है। 20 वीं शताब्दी के शुरुवात में वैसाखी सिखों और हिंदुओं के लिए एक पवित्र दिन था और पंजाब के सभी सभी मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों, ईसाइयों सहित, के लिए एक धर्मनिरपेक्ष त्योहार था। आधुनिक समय में भी ईसाई, सिखों और हिंदुओं के साथ-साथ वैसाखी समारोह में भाग लेते हैं। भांगड़ा जो फसल त्योहार का लोक नृत्य भी है जिसे पारंपरिक रूप से फसल नृत्य कहा जाता है। नए साल और कटाई के मौसम के लिए ,भारत के, पंजाब में कई हिस्सों में मेले आयोजित किए जाते हैं। उन्हीं के सम्मान में हिंदू धर्मावलंबी पारंपरिक पवित्र स्नान के लिए गंगा किनारे एकत्र होते हैं तथा इस पर्व को मनाते है।

बिहार और नेपाल के मिथल क्षेत्र में, नया साल जुरशीतल के रूप में मनाया जाता है। यह मैथिली पंचांग का पहला दिन है। परिवार के सदस्यों को लाल चने सत्तू और जौ और अन्य अनाज से प्राप्त आटे का भोजन कराया जाता है। बंगाली नए साल को हर साल 14 अप्रैल को 'पाहेला बेषाख' के रूप में मनाया जाता है और पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और बांग्लादेश में एक उत्सव 'मंगल शोभाजात्रा' का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव 2016 में यूनेस्को द्वारा मानवता की सांस्कृतिक विरासत के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।विशु ,वैसाखी के ही दिन, केरल में हिन्दू नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है ,और जो मलयाली महीने मेदाम के पहले दिन मनाया जाता है। केरल में यह त्योहार 'विशु' कहलाता है। इस दिन नए, कपड़े खरीदे जाते हैं, आतिशबाजी होती है और 'विशु कानी' सजाई जाती है। इसमें फूल, फल, अनाज, वस्त्र, सोना आदि सजाए जाते हैं और सुबह जल्दी इसके दर्शन किए जाते हैं। इस दर्शन के साथ नए वर्ष में सुख-समृद्धि की कामना की जाती है।इसी तरह ये ऐतिहासिक त्योहार भारतीय उपमहाद्वीप, पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में, बुद्ध के जन्मदिन के रूप में,मनाया जाता है जो वेसाक कहलाता है, जिसे वैसाखी पूर्णिमा, वैसाखा या वेसाखा के रूप में भी जाना जाता है।

8 अप्रैल 2016 को, अलहमरा (लाहौर) में पंजाबी प्रचार ने विसाखी मेला का आयोजन किया, जहां वक्ताओं ने विस्खी मेला जैसी घटनाओं के माध्यम से पाकिस्तान में 'पंजाबी संस्कृति को जीवित रखने के लिए हमारा संघर्ष जारी रखने' का वादा किया।

गायत्री आर्या
सहायक प्रवक्ता(वाणिज्य विभाग)

अणुव्रत गीत

संयममय जीवन हो ॥
नैतिकता की सुर सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो ॥
अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा
वर्ण, जाति या समप्रदा य से मुक्त धर्म की भाषा
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो
संयममय जीवन हो ॥
मैत्री-भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध, साधन हो
संयममय जीवन हो ॥
विद्यार्थी या शिक्षक हो मजदूर और व्यापारी
नर हो नारी बने नीतिमय जीवनचर्या सारी
कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो
संयममय जीवन हो ॥
प्रभु बनकर ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं
प्रामाणिक बनकर ही संकट सागर तर सकते हैं
शौर्य-वीर्य-बलपती अहिंसा ही जीवन दर्शन हो
संयममय जीवन हो ॥
सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा
तुलसी अणुव्रत-सिंह नाथ सारे जग में पसरेंगा
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन-मन हो
संयममय जीवन हो ॥
बदले युग की धारा।
नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो अणुव्रतों के द्वारा
बदले युग की धारा।
मानवीय मूल्यों की रक्षा अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता प्रामाणिकता उसका अमल हृदय है।
हिंसा के इस गहन तिमिर में अणुव्रत एक उजाला॥
धार्मिक है, पर नहीं कि बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का यह कैसा अभिनय है ?
इस उलझन का धर्म क्रांति ही है कमनीय किनारा॥
मूल्यपरक शिक्षा के युग में संयम का अकंन हो,
सत्य अहिंसा से आप्लावित जन-जन का जीवन हो।
भोगवाद के चक्रवाद से सहज मिले छुटकारा॥
व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का उपचार अणुव्रत देगा।
प्रकटे अब परमार्थ-चेतना, उपकृत हो जग सारा॥
करें प्रबल पुरूषार्थ, सभी में अभिनव आस्था जागे,
जोड़ें सबके अन्तर-मानस को करूणा के धागे।
बदले युग की धारा।

Shakuntala Devi

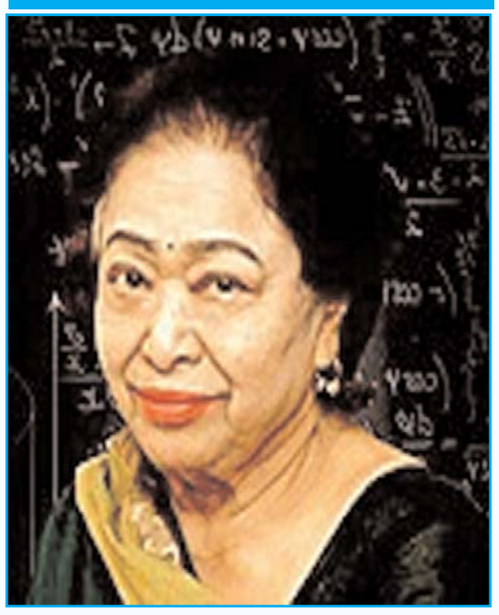

Shakuntala Devi was well known Indian mental calculator especially known for her speedy calculations for large numbers. She is often called as "Human computer" for the same. This talent brought her a special space in "The Guinness book of world records ". However, the certificate for the record was given posthumously on 30 July 2020, despite Devi achieving her world record on 18 June 1980 at Imperial College, London. Devi was a precocious child and she demonstrated her arithmetic abilities at the University of Mysore without any formal education.

Devi strove to simplify numerical calculations for students. She wrote a number of books in her later years, including novels as well as texts about mathematics, puzzles, and astrology. She wrote the book The World of Homosexuals, which is considered the first study of homosexuality in India. She saw homosexuality in a positive light and is considered a pioneer in the field.

Shakuntala Devi was born on 4 November 1929 at Bangalore, Karnataka. Her father, C V Sundararaja Rao, worked as a trapeze artist, lion tamer, tightrope walker and magician in a circus. He discovered his daughter's ability to memorise numbers while teaching her a card trick when she was about three years old. Her father left the circus and took her on road shows that displayed her ability at calculation. She did this without any formal education. At the age of six she demonstrated her arithmetic abilities at the University of Mysore.

In 1944, Devi moved to London, United Kingdom.

Devi travelled to several countries around the world demonstrating her arithmetic talents. She was on a tour of Europe throughout 1950 and was in New York City in 1976.In 1988, she travelled to the US to have her abilities studied by Arthur Jensen, a professor of educational psychology at the University of California, Berkeley. Jensen tested her performance at several tasks, including the calculation of large numbers. Examples of the problems presented to Devi included calculating the cube root of 61,629,875 and the seventh root of 170,859,375. Jensen reported that Devi provided the solution to the above-mentioned problems (395 and 15, respectively) before Jensen could copy them down in his notebook. Jensen published his findings in the academic journal Intelligence in 1990.

In 1977, at Southern Methodist University, she gave the 23rd root of a 201-digit number in 50 seconds. Her answer, which was 546,372,891, was confirmed by calculations done at the US Bureau of Standards by the UNIVAC 1101 computer, for which a special program had to be written to perform such a large calculation, which took a longer time than for her to do the same.

On 18 June 1980, she demonstrated the multiplication of two 13-digit numbers – 7,686,369,774,870 × 2,465,099,745,779. These numbers were picked at random by the Department of Computing at Imperial College London. She correctly answered 18,947,668,177,995,426,462,773,730 in 28 seconds. This event was recorded in the 1982 Guinness Book of World Records. Writer Steven Smith commented, "the result is so far superior to anything previously reported that it can only be described as unbelievable."

Shakuntala Devi explained many of the methods she used to do mental calculations in her 1977 book Figuring: The Joy of Numbers.

Dr. Mohini
Assistant Professor of Mathematics

महावीर जैन

महावीर जैन, धर्म के महान्यायी,
तपस्वी, साधु, ज्ञानी विद्वान्
उनके शिक्षा से जगमग उजियारा,
भारत के जीवन को मिली प्रेरणा।

अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह का पाठ,
महावीर जैन ने सबको दिया बताया।
भ्रष्टाचार, अन्याय से मुक्ति के लिए,
धर्म की रक्षा में जीवन व्यतीत किया।

कर्म का सिद्धांत, जीवन का मूल मंत्र,
यह थे वे शिक्षाएं, महान्यायी के पंथ।
जीवन में सुख और शांति पाने का रास्ता,
महावीर जैन ने दिखाया बताया।

हमेशा शुद्ध रहना, शिक्षा का यह पहला सूत्र,
महावीर जैन का अमूल्य विचार।
कर्मों के साथ बढ़ें, नये संग्रह करें,
ऐसी थी वे दिव्य उपदेशवाणी कहानी।

ध्यान में रहें, चित्त को शुद्ध करें,
यह थी महावीर जैन की परंपरा।
कविताओं में गहरी छाप छोड़ गए,
उनके अनमोल शिक्षाओं ने हमें छू लिया।

महावीर जैन, तुम्हारी शिक्षाएं हमें याद हैं,
और यहीं तक हमेशा याद रहेंगी।

जलियाँवाला बाग में बसंत

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिली है कंटक-कुल से,
वे पौधे, व पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।।
परिमल- हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है,
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे-से आना,
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।
वायु चले, पर मंद चाल-से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।
कोकिल गावें, किंतु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।
लाना संग में पुष्प, न हो वे अधिक सजीले,
हो सुगंध भी मंद, ओर से कुछ-कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना,
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर,
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी ला कर।
आशाओं से भरे भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।
कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना।
तड़प-तड़पक र वृद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।
यह सब करना, किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोक-स्थान बहुत धीरे-से आना।

कविता सहायक प्रवक्ता(हिंदी-विभाग)

जलियाँवाला बाग हत्याकांड: आजादी के इतिहास का वो काला दिन जो कभी भुलाया नहीं जा सकता

जलियांवाला बाग भारत की आजादी के इतिहास की वो घटना है, जिसके बारे में सोचने पर भी रूह कांप जाती है. 13 अप्रैल 1919 को ये दुखद घटना घटी थी, जब पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित जलियांवाला बाग में निहत्थे मासूमों का कत्लेआम हुआ था. अंग्रेजों ने निहत्थे भारतीयों पर अंधाधुंध गोलियां चलाई थीं. इस घटना को अमृतसर हत्याकांड के रूप में भी जाना जाता है. आज इस नरसंहार को पूरे 104 साल बीत चुके हैं. लेकिन आज भी इसके जख्म ताजा से लगते हैं और इस दर्दनाक और दुख से भरे दिन को भारत के इतिहास की काली घटना के रूप में याद किया जाता है.

जलियाँवाला बाग की घटना भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। इस घटना का ब्यौरा सुनकर आज भी हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह घटना भारत के पंजाब प्रांत के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के निकट जलियांवाला बाग के सार्वजनिक मैदान में बैसाखी पर्व मनाने वाली जनसभा के साथ रौलेट एक्ट के विरोध में व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दो नेता सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के खिलाफ अहिंसक विरोधकर्ता भी जमा हुए थे। अंग्रेजी ब्रिगेडियर जनरल डायर ने अपने सैनिकों के साथ अचानक इस घटनास्थल पर पहुंचकर सभा को घेर लिया और 10 मिनट तक लगातार गोलियां चलाने का आदेश दिया। जलियांवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहाँ तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, लेकिन कुआं भी लाशों से भर गया। जिसमें हजारों निहत्थे पुरुष महिलाएं और बच्चे मारे गए थे। जनरल डायर की योजना थी कि इस कुकर्म से भारतवासी दब जाएंगे और डरकर देश की आजादी की लड़ाई से हट जाएंगे। लेकिन जनरल डायर की यह धारणा गलत साबित हुई। निर्दोष और निहत्थे नागरिकों पर इस तरह के अत्याचार को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह दिन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सबसे काला दिन माना जाता है। भविष्य में किसी भी विरोध प्रदर्शन को रोकने के लिए सरकार ने पंजाब में मार्शल लॉ लागू कर दिया, जिसमें सार्वजनिक झंडे और अन्य अपमान शामिल थे। इस घटना की खबर सुनकर भारतीय में नाराजगी बढ़ी और पूरे उपमहाद्वीप में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। प्रसिद्ध नेता रविंद्र नाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया। महात्मा गांधी ने केसर-ए-हिंद की उपाधि वापस कर दी जिसे इन्हें बोअर युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा दिया गया था। 14 अक्टूबर 1919 को भारत सरकार ने डिसऑर्डर इंक्वायरी कमेटी के गठन की घोषणा की। यह समिति लॉर्ड विलियम हंटर की अध्यक्षता के चलते उनके नाम पर हंटर कमीशन के नाम से जानी जाती है। इसमें भारतीय भी सदस्य थे। मार्च 1920 में प्रस्तुत अंतिम रिपोर्ट में समिति ने सर्वसम्मति से डायर के कृत्यों की निंदा की और उसे अपने पद से इस्तीफा देने का निर्देश दिया। महात्मा गांधी ने जल्द ही अपने पहले बड़े अहिंसक सत्याग्रह अभियान असहयोग आंदोलन को शुरू किया। जो 25 वर्ष बाद भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। अतः इस घटना के बाद आजादी के लिए लड़ने वालों के अंदर ऐसी आग जली जिसने अंग्रेजी राज को जलाकर हमें आजाद हवा में सांस लेने के काबिल बनाया।आज इस घटना को पूरे 104 साल बीत चुके हैं, लेकिन इसके जख्म आज भी भरे नहीं हैं. ब्रिटिश सरकार के इस भयानक कारनामे की का सबूत आज भी दीवारों पर मौजूद है। ब्रिटिश सैनिकों ने जब गोलीबारी की थी तो तमाम गोलियां दीवारों में जा घुसी थीं. उन गोलियों के निशान आज भी मौजूद हैं. इस हत्याकांड को लेकर आज तक ब्रिटेन की ओर से कोई माफी या दुख नहीं जताया गया। हालांकि, 1997 में भारत दौरे पर आईं महारानी एलिजाबेथ द्वितीय जलियांवाला बाग स्मारक पुहंची थी और उन्होंने पीड़ितों को श्रद्धांजलि दी थी. साथ ही इस घटना को विचलित करने वाला बताते हुए दुख जाहिर किया था।

ममता रानी
सहायक प्रोफेसर(इतिहास विभाग)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान व्यक्ति थे जो दो कार्यकाल तक भारत के पहले उपराष्ट्रपति और उसके बाद देश के दूसरे राष्ट्रपति बने। वे एक अच्छे शिक्षक, दर्शनशास्त्र और लेखक भी थे। भारत में प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में उनका जन्मदिन मनाया जाता है।

डॉ0 राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को चेन्नई से लगभग 200 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित एक छोटे से कस्बे तिरूतनी में हुआ था। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वी. रामास्वामी और माता का नाम सीता झा था। रामास्वामी एक गरीब ब्राह्मण थे किंतु विद्वान ब्राम्हण भी थे। इनके पिता के ऊपर पुरे परिवार की जिम्मदारी थी, और तिरूतनी कस्बे के जमींदार के यहां एक साधारण कर्मचारी के समान कार्य करते थे। इस कारण राधाकृष्णन को बचपन से ही ज्यादा सुख सुविधा नहीं मिली। डॉ0 राधाकृष्णन अपने पिता की दूसरी संतान थे। उनके चार भाई और एक छोटी बहन थी छः बहन-भाइयों और दो माता-पिता को मिलाकर आठ सदस्यों के इस परिवार की आय अत्यंत सीमित थी। इस सीमित आय में भी डॉक्टर राधाकृष्णन ने सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शुरुआती जीवन तिरुतनी और तिरुपति जैसे धार्मिक स्थलों पर ही बीता।

यद्यपि इनके पिता धार्मिक विचारों वाले इंसान थे, लेकिन फिर भी उन्होंने राधाकृष्णन को पढ़ने के लिए क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, तिरुपति में दाखिल कराया। इसके बाद उन्होंने वेल्लूर और मद्रास कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त की। वह शुरू से ही एक मेधावी छात्र थे। अपने विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने बाइबल के महत्वपूर्ण अंश याद कर लिए थे, जिसके लिए उन्हें विशिष्ट योग्यता का सम्मान भी प्रदान किया गया था।

उन्होंने वीर सावरकर और विवेकानंद के आदर्शों का भी गहन अध्ययन कर लिया था। सन 1902 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की जिसके लिए उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की गई। कला संकाय में स्नातक की परीक्षा में वह प्रथम आए। इसके बाद उन्होंने दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर किया और जल्द ही मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। डॉ0 राधाकृष्णन ने अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित कराया।

उस समय मद्रास के ब्राह्मण परिवारों में कम उम्र में ही शादी संपन्न हो जाती थी और राधाकृष्णन भी उसके अपवाद नहीं रहे। 1903 में 16 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह दूर के रिश्ते की बहन 'सिवाकामू' के साथ हो गया। उस समय उनकी पत्नी की आयु मात्र 10 वर्ष की थी। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के ज्ञानी, एक महान शिक्षाविद, महान दार्शनिक, महान वक्ता होने के साथ ही विज्ञानी हिंदू विचारक भी थे। राधाकृष्णन ने अपने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रूप में बिताए। वह एक आदर्श शिक्षक थे। डॉक्टर राधाकृष्णन के पुत्र डॉक्टर एस. गोपाल ने 1989 में उनकी जीवनी का प्रकाशन भी किया। डॉ0 राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन शास्त्र एवं धर्म के ऊपर अनेक किताबें लिखी जैसे 'गौतम बुद्धाः जीवन और दर्शन', 'धर्म और समाज', 'भारत और' आदि। वे अक्सर किताबे अंग्रेजी में लिखते थे।

17 अप्रैल 1975 को एक लम्बी बीमारी के बाद डॉ0 राधाकृष्णन का निधन हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान हमेशा याद किया जाता है। इसलिए 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाकर डॉ0 राधाकृष्णन के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है। इस दिन देश के विख्यात और उत्कृष्ट शिक्षकों को उनके योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। राधाकृष्णन को मरणोपरांत 1975 में अमेरिकी सरकार द्वारा टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो कि धर्म के क्षेत्र में उत्थान के लिए प्रदान किया जाता है. इस पुरस्कार को ग्रहण करने वाले यह प्रथम गैर-ईसाई सम्प्रदाय के व्यक्ति थे। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में उनके कार्यों की वजह से आज भी उन्हें एक आदर्श शिक्षक के रूप में याद किया जाता है।

डॉ0 राधाकृष्णन को मिले सम्मान व अवार्ड

>>>> शिक्षा और राजनीति में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए डॉ. राधाकृष्णन को सन 1954 में सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।
>>>> 1962 से राधाकृष्णन जी के सम्मान में उनके जन्म दिवस 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई।
>>>> सन 1962 में डॉ. राधाकृष्णन को 'ब्रिटिश एकेडमी' का सदस्य बनाया गया।
>>>> पोप जॉन पाल ने इनको 'गोल्डन स्पर' भेट किया।
>>>> इंग्लैंड सरकार द्वारा इनको 'आर्डर ऑफ मेंरिट' का सम्मान प्राप्त हुआ।

संजू (क्लर्क)

अनुपमा यात्रा
स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा हरियाणा की आवाज प्रिंटर्स, भिवानी से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है।
प्रबंध सम्पादक: रचना अरोड़ा
मोबाईल नम्बर: 9306940790 **नोट:** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा
Gmail: anupama.express@ammb.ac.in